Dr. Jaya
Lecture series:- 90 Deptt. of Sociology
Date :- 29/07/2020 B.A Part-I (Hons)
Paper-2, Unit-4

Topic :- Process and Effect of Division of Labour

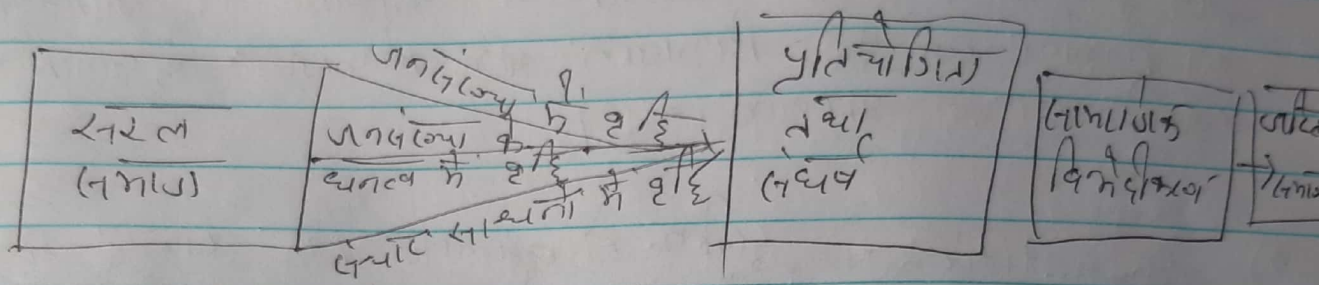

दुर्खीम ने जिन चरणों के द्वारा श्रम विभाजन की प्रक्रिया को स्पष्ट किया है, उन्हें निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है :—

दुर्खीम ने स्पष्ट किया कि श्रम विभाजन की प्रक्रिया के आधार पर ही समाज में विभिन्न परिवर्तन होते हैं। इन्हीं परिवर्तनों के कारण सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन उत्पन्न हो जाते हैं। श्रम-विभाजन की दशा समाज में जो परिवर्तन उत्पन्न करती है अथवा यह जिस रूप में समाज को प्रभावित करती है, दुर्खीम के चिंतन के आधार पर उसे अग्रांकित क्षेत्रों में स्पष्ट किया जा सकता है :—

i) Specialization — दुर्खीम का कथन है कि समाज में जैसे-जैसे श्रम-विभाजन बढ़ता है, व्यक्तियों में विशेषीकरण बढ़ने लगता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि श्रम-विभाजन तथा विशेषीकरण समानुपातिक हैं तथा इनके बीच एक सकारात्मक संबंध है। श्रम-विभाजन के अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष कार्य के द्वारा ही आजीविका उपार्जित करता है। लम्बी अवधि तक एक विशेष कार्य करते रहने के कारण उस कार्य में व्यक्ति विशेष कुशलता अर्जित कर लेता है।

Scanned with CamScanner

कालान्तर में संपूर्ण समाज कुछ ऐसे समूहों में विभाजित होता हुआ हो जाता है जो एक विशेष कार्य करने में ही अधिक दक्ष होते हैं। श्रम-विभाजन के इस प्रभाव का उल्लेख करते हुए रसेल तथा हीरालाल ने अपनी पुस्तक Caste and Tribes of Central Province में यह स्पष्ट किया है कि भारत में विभिन्न जातियों का एक विशेष कार्य को करने में इसीलिए विशेष कुशलता प्राप्त हो सकी है यहाँ व्यवसायिक आधार पर जातियों का निर्माण एवं पुनः विभाजन श्रम-विभाजन के सामाजिक स्वरूप का ही परिणाम था।

2) Competition — दुर्खीम ने बतलाया कि समाज में श्रम विभाजन के कारण जब प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कार्य में विशेष कुशलता प्राप्त कर लेता है, तब समान व्यवसाय में लगे हुए व्यक्तियों के बीच प्रतियोगिता होने लगती है। दुर्खीम का मानना है कि श्रम-विभाजन के कारण प्रत्येक व्यक्ति की सभी दूसरे व्यक्तियों में प्रतियोगिता नहीं होती बल्कि यह प्रतियोगिता केवल उन्हीं व्यक्तियों तक सीमित रहती है, जो समान व्यवसाय के द्वारा आजीविका उपार्जित करते हैं। एक ही व्यवसायिक वर्ग से संबंधित लोगों के बीच प्रतियोगिता होने से प्रत्येक व्यक्ति न केवल अपने कार्य के महत्व को समझने लगता है बल्कि वह अपने व्यवसाय की प्रगति के लिए भी विशेष योगदान देने लगता है। इसका तात्पर्य है कि प्रतियोगिता श्रम-विभाजन का एक ऐसा परिणाम है जो व्यावसायिक प्रगति के लिए आवश्यक है।

Scanned with CamScanner